Journal of Medicinal Plants Studies
www.PlantsJournal.com

ISSN (E): 2320-3862
ISSN (P): 2394-0530
NAAS Rating 2017: 3.53
JMPS 2017; 5(3): 106-109
© 2017 JMPS
Received: 15-03-2017
Accepted: 16-04-2017

विजित कुमार
शोधार्थी, पीएच.डी. संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

Correspondence
विजित कुमार
शोधार्थी, पीएच.डी संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

सोमलता का प्रतिरूप गुडूची: चिकित्सकीय उपयोगिता के सन्दर्भ में

विजित कुमार

पृथिवी पर जितनी भी वनस्पतियाँ उपलब्ध होती हैं उन सबमें सोम का प्रमुख स्थान है जिसका विशद विवेचन ऋग्वेद में किया गया है। अनुमान है कि उस महत्त्वपूर्ण सोमलता में औषधीय युक्त गुण अवश्य थे और वह उस काल की महत्त्वपूर्ण वनस्पति थी। परन्तु समय के साथ-साथ वह वनस्पति धीरे-धीरे लुप्त होती गई। इस कारण आज उसकी प्राप्ति नहीं होती तथापि अनेक आचार्यों ने सोम के गुण, कर्म, स्वभाव जैसी अनेक वनस्पतियों को सोम का प्रतिरूप सिद्ध करने का प्रयास किया है जिनमें गुडूची को सोम के अत्यधिक निकटतम बताकर वर्णित किया जो आयुवर्द्धक तथा कई रोगों को दूर करने वाली है।

अमरकोश में सोमलता के जो वत्सादिनी, छिन्ना, रूहा, गुडूची, तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका, सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी आदि पद पर्याय रूप में पठित हैं वे ही गुडूची के भी पर्यायवाची हैं। [1] सोमलता के लिए अमृतवल्ली नाम प्रयुक्त होता है[2], जो गुडुची के लिए भी शब्दकोश में प्रयोग किया गया है। [3] सोमलता के लिए गुडुची शब्द का प्रयोग हुआ है तथा गिलोय के लिए आयुर्वेद के ग्रन्थों में गुडूची पद का प्रयोग मिलता है। [4] अमृता नाम वेदों में सोम के लिए प्रयुक्त किया गया है। [5] क्योंकि सोमलता को अमर माना गया है, वहीं गुडूची को भी अमृता नाम से वर्णित किया गया है। [6]

अमृता, अमृतबल्ली अर्थात् कभी न सूखने वाली गुडूची बड़ी लता रूपी मोटी झाड़ी है। यह समुद्र तल से लगभग 1,000 फुट की ऊँचाई पर पायी जाती है। इसका तना काफी मोटा होता है। देखने में यह रस्सी जैसा लगता है। पत्ते कोमल पान के आकार के तथा फल मटर के दाने जैसे होते हैं। यह भारतवर्ष में प्रायः कुमाँऊ से असम, वर्मा और बिहार तक कोंकण से कर्नाटक व सीलोन तक सभी स्थानों में प्राप्त होती है। कुन्तलाकार क्रम में यह जिस वृक्ष पर चढ़ती है, उसी वृक्ष के कुछ गुण भी अपने अन्दर समाहित कर लेती है। इसीलिए नीम वृक्ष पर चढ़ी गुडूची श्रेष्ठ मानी जाती है। यह Menispermanceae के परिवार के अन्तर्गत आती है। विश्व के प्रायः सभी देशों (अफ्रीका, दक्षिणी-पूर्वी एशिया, आस्ट्रेलिया) आदि में ये पायी जाती हैं। विश्वभर में गुडूची की 40 प्रजातियाँ पायी जाती हैं वहीं भारत में प्रजातियों की संख्या केवल चार ही है। गुडूची रस बहिर्जात और अन्तर्जात विषाणुओं को दूर करने में बहुत प्रभावी माना जाता है यह मस्तिष्क से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालती है। [7]

गुण धर्म व रासायनिक संघटक

यह त्रिदोष शामक है। स्निग्ध होने से वात, कषाय होने से कफ और पित्त का शमन करती है यह कुष्ठघ्न, वेदनास्थापना, तृष्णानिग्रहण, छर्दिनिग्रहण, दीपन पाचन, पित्तसारक, अनुलोमन और कृमिघ्न है। अमाशयगत अम्लता इससे कम होती है, हृदय को बल देने वाली है। रक्त विकार तथा पांडुरोग में गुणकारी है। कास, दौर्बल्य, मधुमेह, त्वचा के रोगों तथा कई प्रकार के ज्वर में उत्तम कार्य करती है आधुनिक चिकित्सा-शास्त्रियों के विचार में गुडूची सूक्ष्मतम विषाणु समूह से लेकर स्थूल क्रमियों तक अपना प्रभाव दर्शाती है। क्षय रोग उत्पन्न करने वाले माइक्रोवैक्टीरियम ट्यूबर-कुलौसिस जीवाणु की वृद्धि को यह सफलतापूर्वक रोकती है। शरीर के जिस भाग में भी ये जीवाणु शान्त अवस्था में पड़े हो गुडूची वहीं पर पहुँचकर उनको विनष्ट करती है। आँत और मूत्र संस्थान के साथ-साथ पूरे शरीर को प्रभावित करने वाले ई. कोलाई नामक रोगाणु का अन्त करती है। [8]

गुडूची का रस ग्लूकोज टालरेंस तथा एड्रडीनेलिन जन्य हाइपर ग्लाइसीमिया में लाभकारी एवं त्वरित परिणाम वाला है। यह शरीर में इंसुलिन की उत्पत्ति व रक्त में उसकी घुलनशीलता को बढ़ाती है। इससे रक्तशर्करा घटती है। गुडूची के कांड (गाँठ) में लगभग 1.2% स्टार्च और अनेक कडुवे जैव सक्रिय संघटक होते हैं इसमें गिलोइन नामक एक कडुआ ग्लूकोसाइड तथा तीन प्रकार के एल्कोलाइड होते हैं। इनमें एक प्रमुख क्षाराभ बर्बेरीन है। इसके अतिरिक्त तिक्तग्लूकोसाइड, गिलोइमिन, कैसमेंथिन, पमारिन्, रीनात्पेरीन टीनोस्पोरिक नामक जैव सक्रिय पदार्थ होते हैं। [9] एवं इसमें वसा, अल्कोहल, ग्लिस्रौल, एसेशियल ऑयल तथा कई प्रकार के वसा अम्ल होते हैं। गुडूची आयुर्वेद चिकित्सा में एक महत्वपूर्ण औषधि है अमृता के रूप में प्रतिष्ठित इस शक्तिशाली जड़ी बूटी का प्राचीन काल से अनेक आयुर्वेदिक प्रयोगों में एक अभिन्न अंग के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है।

गुडूची अपने एंटी आक्सीडेंट गुण के कारण एक रसायन के रूप में कार्य करती है। यह श्वेत रक्त कोशिकाओं की दक्षता बढ़ाने के साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए जानी जाती है। जिगर और गुर्दे से विषाक्त पदार्थों को हटाती है। गुडूची के उपयोग से जठराग्नि पर नियंत्रण पाया जा सकता है। यह शरीर में लार का निर्माण करती है, जिससे पेट के हानिकारक एसिड को शरीर से बाहर निकालने में मदद मिलती है।

इसकी जड़ों का रस मूत्रविकार को दूर करता है बैक्टीरिया उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होता है गुडूची के प्रयोग से प्रतिरक्षा तंत्र मजबूत होता है। यह मानव शरीर के व्हाइट ब्लड को बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त यह मेंटल डिसऑर्डर में भी काम आती है। इसके नियमित सेवन से व्यक्ति को मानसिक थकान नहीं होती। जिससे वह दिनभर थकान रहित अनुभव करता है।

गुडूची के छालयुक्त तने में विभिन्न प्रकार के रासायनिक घटक पाये जाते है जिनमें प्रमुख तिक्तग्लूकोसाइड, जिल्वाएन ग्लूकोसाइड, जिलोनिन, इसके अतिरिक्त तीन तिक्त यौगिक 1. टिनोस्पोरोन 2. टिनोस्पोरिक एसिड और 3. टिनस्पोराल पाए जाते हैं। अल्प मात्रा में बर्बेरीन नामक तत्व भी मिलता है। [10]

गुडूची का पारम्परिक भारतीय चिकित्सा में सदियों से प्रयोग किया जाता रहा है। परन्तु पश्चिमी दुनिया के लिए अपेक्षाकृत नया है आयुर्वेदिक चिकित्सा में गुडूची शरीर की प्रजनन प्रणाली, रक्त और वसा को प्रभावित करने के लिए जानी जाती है। यह गठिया, तपेदिक और पीलिया के इलाज के लिए प्रयोग किया गया है।

"इसको कैप्सूल या पाउडर के रूप में भी प्रयोग किया जाता है गुडूची तीव्र संक्रमण को रोकने के लिए प्रयुक्त होती है। यह पाचन में सहायक, कामोद्दीपक और मूत्रवर्द्धक के रूप में जानी जाती है। 'पूरक और वैकल्पिक चिकित्सा' के एक अध्ययन में गुडूची विकिरण उपचार से यह पाया गया कि इसमें नकारात्मक प्रभाव को रोकने में मदद मिलती है। यह प्रयोग वयस्क नर चूहों पर किया गया था। इसमें पुरुषों के विकिरण उपचार के हानिकारक प्रभाव पर ध्यान केन्द्रित किया। निष्कर्ष यह निकला-जिन वयस्क नर चूहों पर गुडूची का प्रयोग किया उनके नकारात्मक विकिरण की अपेक्षा जिन पर प्रयोग नहीं किया उनमें यह मात्रा अधिक थी। इस प्रयोग में गुडूची विकिरण उपचार से गुजरने पर जो पुरुषों में बाँझपन और संबंधित समस्याएँ होती है उनका भलीभाँति इस विधा से उपचार सम्भव है। [11]

स्वामी रामदेव जी के प्रयोगात्मक अध्ययन में उन्होंने अनेक रक्त कैंसर रोगियों को ज्वार के साथ गिलोय रस मिलाकर दिया तो पता लगा कि रक्त कैंसर ठीक हो गया। आज भी इसका प्रयोग कर रहे रोगियों का कैंसर ठीक हो रहा है। [12]

वेदों में सोम के साथ मधु मिलाकर पान करने का वर्णन अनेक मन्त्रों में प्राप्त होता है। [13] इसी प्रकार गुडूची के साथ मधु मिलाने से अनेक रोगों का निदान किया जा सकता है। [14] इसके अतिरिक्त गुडूची बलवर्द्धक, आयुवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक एवं वातज आदि रोगों का नाश करने वाली है जिसका वर्णन हमें चरक संहिता [15] भैषज्य रत्नावली [16] आदि आयुर्वेदिक ग्रन्थों में प्राप्त होता है। सुश्रुत संहिता में गुडूची गण का पाठ किया गया है जिसमें गुडूची सहित नीम, कुस्तुम्बुरू (धनिया) चन्दनादि गुडूच्यादिगण का उल्लेख है जो सभी प्रकार के ज्वरों को नष्ट करता है। [17] भिन्न-भिन्न द्रव्यों जैसे- आँवला, शतावर, सोंठ, गुड़ आदि के साथ गिलोय का मिश्रण करने से विभिन्न रागों (वात, ज्वरादि) का निवारण किया जा सकता है। [18] घृत के साथ सेवन से तो यह आमवात जैसे असाध्य रोगों का निदान करने में सहायक है।

इस विवेचन से यह स्पष्ट है कि प्राचीन समय में व्याप्त रोगों के निवारणार्थ जिन औषधीय तत्त्वों का समावेश सोम में प्राप्त होता है प्राय: गुण-धर्म स्वाभाव के साम्यानुसार उन्हीं औषधीय तत्त्वों से युक्त गुडूची भी आधुनिक समय में हमारे समक्ष परिलक्षित होती है। वस्तुत: जिन-जिन रोगों को दूर करने के लिए सोम से प्रार्थना किये जाने का वर्णन मिलता है अथवा सोम के सेवन से जिन आसाध्य रोगों को दूर किया जाता था उन्हीं रोगों के निवारणार्थ गुडूची का भी उपयोग किया जाता है। यद्यपि यह सत्य है कि किसी भी शास्त्र में सोम और गुडूची में अभेद होने का संकेत नहीं मिलता है। न ही दोनों के परस्पर पर्याय होने का ही वर्णन है तथापि गुण-धर्म की समानता के आधार पर दोनों में पर्याप्त साम्य दिखाई देता है।

आयुर्वेद में वर्णित गुडूची अपने अन्दर उन समस्त औषधीय तत्त्वों का समावेश किये हुये प्रतीत होती है जिनका वर्णन हमें वैदिक सोम में प्राप्त होता है अत: इस समानता के आधार यह भी आवश्यक हो जाता है कि सोम और गुडूची का व्यापक रूप से अध्ययन किया जाये जिससे सोम और गुडूची में परस्पर साम्य और वैषम्य को स्पष्ट किया जा सके।

सन्दर्भ

1. अमरकोश 1.3 (ख) अ. को. 1.3
2. ऋग्वेद सुबोध भाष्य।। 9.1.1
3. शब्दकोश
4. भै.र. 5.158
5. अपाम सोमोऽमृता भूमददर्शज्योति।। तै.सं. 3.2.5.4
6. त्रिवृताममृता द्राक्षा।। भै.र. 101.4
7. वनौषधि चन्द्रोदय, चन्द्रराज भण्डारी, पृष्ठ 87 (1-5)
8. वनौषधि चन्द्रोदय, चन्द्रराज भण्डारी, पृष्ठ 88
9. आ. ज. बू. र., आचार्य बालकृष्ण, पृष्ठ 205
10. वनौषधि चन्द्रोदय, चन्द्रराज भण्डारी, पृष्ठ 85

11. निकोल फाफर्ड द्वारा 16 अगस्त 2011, Ayurvedic Medicinal Plants of India
12. आयुर्वेदिक ज.बू.र.।। आचार्य बालकृष्ण, पृष्ठ 204
13. मधोर्धारामनुक्षर- ऋ. 9.17.8, 6.20.3
14. प्रातर्निपातो मधुना सह।। भै.र. 5.104
15. (क) चरक संहिता- योनि व्यापत चिकित्सा। 53-54
(ख) चरक संहिता सूत्र स्थान, 40
16. (क) दोषहीनो यदा सूतंस्तदा मृत्युज्वरापाहः।। भै.र. 2.6
(ख) भै.र., वातरक्त चिप्र. 27.137
(ग) भै.र. मस्तिष्क रोग सामान्य चि. 101.4
17. गुडूची निम्बकुस्तुरूचन्दनानि पद्मकं चेति। एष सर्वज्वरान् हान्ति, गुडूच्यादिस्तु दीपनः।। 50-51।। सु.अ. 38
18. भै.र. 5, 85, 96.135